तुम्हारे दर्श बिन स्वामी मुझे नहिं चैन पड़ती है।
छवी वैरागमय तेरी मेरी आखों में फिरती है।टेक।।

निराभूषण विगत दूषण परम आसन मधुर भाषण।
नजर नैनों की आशा की अनी पर से गुजरती है।।१।।

नहीं कर्मों का डर हमको, कि जब लग ध्यान चरणन में।
तेरे दर्शन से सुनते हैं, करम रेखा बदलती है।।२।।

मिले गर स्वर्ग की सम्पति अचम्भा कौन सा इसमें।
तुम्हें जो नयन भर देखे गति दुरगति की टलती है।।३।।

हजारों मूर्तियाँ हमने बहुत सी अन्य मत देखीं।
शान्ति मूरत तुम्हारी सी नहीं नजरों में चढ़ती है।।४।।

जगत सिरताज हो जिनराज सेवक को दरश दीजे।
तुम्हारा क्या बिगड़ता है मेरी बिगड़ी सुधरती है।।५।।